

- 55 वैतरणी नरकस्था  
 56 स्रोतो ऽम्भःसरणं स्वतः ॥ १०८६ ॥  
 57 प्रवाहः पुनरोद्यः स्याद्वेणी धारा रयश्च सः ।  
 58 घट्टस्तीर्थो ऽवतारे  
 59 ऽम्बुवृद्धौ पूरः प्लवो ऽपि सः ॥ १०८७ ॥  
 60 पुटभेदास्तु वक्राणि  
 61 भ्रमास्तु जलनिर्गमाः ।  
 62 परीवाहा जलोच्चासाः  
 63 कूपकास्तु विदारकाः ॥ १०८८ ॥  
 64 प्रणाली जलमार्गे  
 65 ऽथ पानं कुल्या च सारणिः ।  
 66 सिकता वालुका  
 67 विन्दौ पृषत्पृषतविप्रुषः ॥ १०८९ ॥  
 68 तम्बालेचिकिलौ पङ्कः कर्दमश्च निषदरः ।  
 69 शादो  
 70 हिरण्यबाहुस्तु शोणो  
 71 नदे पुनर्वहः ॥ १०९० ॥  
 72 भिद्य उद्यः सरस्वांश्च

55. Vaitaranî (2 W.). — 56. Strömung. — 57. Starke Strömung (5 W.). — 58. Landungsplatz (3 W.). — 59. Angeschwollener Fluss (2 W.). — 60. Krümmungen (2 W.). — 61. Stromschnellen (2 W.). — 62. Abzugskanäle (2 W.). — 63. Höhlungen in einem ausgetrockneten Flusse, in denen das Wasser zurückgehalten wird (2 W.). — 64. Ausfluss. — 65. Bewässerungskanal (3 W.). — 66. Flusssand (2 W.). — 67. Tropfen (4 W.). — 68. 69. Sumpf (6 W.). — 70. Çona (2 W.). — 71. 72. Fluss (männlich gedacht) (5 W.).